MAKTABATUL MADINA INDIA

Allah Ka Khauf (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 466
Weekly Booklet : 466

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 6 साल पहले (1441 हिजरी) का बयान

अल्लाह का ख़ौफ़

(सफ़्हात : 16)

सूरतुत्तकासुर के मज़ामीन	03
इब्ने आदम का माल	05
दो अक़्सामे नेमत	10
12 साल तक ह़िसाबो किताब	15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल्लाह का ख़ौफ़[(1)]

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "अल्लाह का ख़ौफ़" पढ़ या सुन ले उसे अपना ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ दे कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान सख़ावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : "अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मैं ने तुझ में दस हज़ार कान पैदा फ़रमाए, यहां तक कि तू ने मेरा कलाम सुना और दस हज़ार ज़बानें पैदा फ़रमाईं जिन के ज़रीए तू ने मुझ से कलाम किया। तू मुझे बहुत ज़ियादा मह़बूब और मेरे नज़्दीक तरीन उस वक़्त होगा जब तू मेरा ज़िक्र करेगा और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर कसरत से दुरूद भेजेगा।" (القول البدیع، ص275، 276)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ख़ौफ़े इलाही की तल्वार से शहीद

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने किसी मद्रसे के बाहर एक बच्चा देखा जो रो रहा था, इस्तिफ़सार (यानी पूछने) पर उस ने बताया, हमारे उस्ताज़ साह़िब ने आज के

1...अमीरे अहले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 26 रबीउ़ल अव्वल 1441 हिजरी को मदनी मुज़ाकरे से पहले आ़शिक़ाने रसूल के दरमियान ख़ौफ़े ख़ुदा के मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه शोबा "हफ़्तावार रिसाला" इसे रिसाले की सूरत में पेश कर रहा है ख़ुद भी पढ़िए और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिए तक़्सीम भी कीजिए। (शोबा हफ़्तावार रिसाला)

सबक़ में तख़्ती पर बाज़ आयाते करीमा लिखवाई हैं, जो मुझे रुला रही हैं, येह कहते हुए उस ने तख़्ती आगे बढ़ा दी, उस में लिखा था :

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ﴿۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ज़ियादा माल जमा करने की त़लब ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया। यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा। हां हां अब जल्द जान जाओगे। फिर यक़ीनन तुम जल्द जान जाओगे। यक़ीनन अगर तुम यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते (तो माल से मह़ब्बत न रखते)।

वोह बच्चा बराबर रोए जा रहा था, वोह बुज़ुर्ग उस की येह रिक़्क़त देख कर बेह़द मुतअस्सिर हुए और फ़रमाने लगे : बेटा ! इस सूरत का सबक़ यहां तक पूरा नहीं हो जाता बल्कि आगे भी है, जो शायद तुम्हें कल दिया जाए। येह कहते हुए उन्हों ने सूरतुत्तकासुर की बक़िय्या आयाते करीमा भी सुना दीं जो येह हैं :

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ﴿۶﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۠﴿۸﴾

(پ30،التکاثر:6تا8)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम ज़रूर जहन्नम को देखोगे। फिर बेशक तुम ज़रूर उसे यक़ीन की आंख से देखोगे। फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेमतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।

जहन्नम का तज़्किरा सुन कर वोह बच्चा थर्रा उठा, कांपता हुवा गिरा और तड़पने लगा और पछाड़ें खा खा कर ठन्डा हो गया। उस का उस्ताज़ लपक कर आया और उस ने उन बुज़ुर्ग को पकड़ लिया। लोग इकठ्ठे हो गए, मर्हूम बच्चे के मां बाप भी आ पहुंचे। उन बुज़ुर्ग को बत़ौरे क़ातिल अ़दालत में पेश कर दिया गया। क़ाज़ी साह़िब ने उन बुज़ुर्ग से सफ़ाई त़लब की तो उन्हों ने सारा माजरा सुना दिया। येह सुन कर क़ाज़ी साह़िब ने फ़रमाया : येह बच्चा इन्तिहाई सआ़दत मन्द था और

ख़ौफ़े इलाही की तल्वार से शहीद हुवा है। उन बुज़ुर्ग को बा इ़ज़्ज़त बरी कर दिया गया। (نزہۃ المجالس، 2/94 ملخصاً)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

प्यारे बच्चे के ख़ौफ़े ख़ुदा पर फ़िदा सुनते ही आयतें ढेर जो हो गया
काश मिल जाए मुझ को भी ऐसी विला मेरे मरने का बाइ़स हो ख़ौफ़े ख़ुदा

सूरतुत्तकासुर के मज़ामीन

क़ुरआने करीम के तीसवें पारे में मौजूद सूरतुत्तकासुर का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में फ़क़त़ दुनिया की बेहतरी के लिए अ़मल करने की मज़म्मत बयान की गई और आख़िरत के लिए तय्यारी न करने पर तम्बीह की गई है, जिस की तफ़्सील कुछ यूं है : ﴿1﴾ इस सूरत की इब्तिदा में बताया गया कि ज़ियादा माल जमा करने की ह़िर्स ने लोगों को आख़िरत की तय्यारी से ग़ाफ़िल कर दिया है और येह ह़िर्स उन की दिलों में रही यहां तक कि उन्हें मौत आ गई। ﴿2﴾ येह बयान किया गया कि ज़ियादा माल जमा करने की ह़िर्स रखने वालों को नज़्अ़ के वक़्त उस का अन्जाम मालूम हो जाएगा और अगर वोह उस का अन्जाम यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते तो माल से कभी मह़ब्बत न रखते। ﴿3﴾ इस सूरत के आख़िर में येह बताया गया कि माल की ह़िर्स रखने वाले मरने के बाद ज़रूर जहन्नम को देखेंगे और क़ियामत के दिन लोगों से नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।

(तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, 10/808)

जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने सूरतुत्तकासुर पढ़ता हूं, तुम में से जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पढ़ा। हम में से कुछ तो रोए और कुछ न रोए। जो नहीं रो सके थे उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने रोने की कोशिश की मगर न रो सके। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने इसे दोबारा पढ़ता हूं जो रोएगा, उस के लिए जन्नत होगी और जो न रो सके वोह रोने की सी शक्ल ही बना ले। (نوادر الاصول، 4/81، حدیث:862) काश ! हम इस सूरते मुबारका का तर्जमा याद कर लें और फिर जब भी इस सूरत को पढ़ें या सुनें तो ख़ौफ़े ख़ुदा में रोना नसीब हो जाए। बहर ह़ाल इस रिवायत में हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निहायत अछूते अन्दाज़ में नेकी की दावत देने का रिक़्क़त अंगेज़ बयान है। इस रिवायत से मालूम हुवा कि मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की अ़ता से जिसे चाहें जो चाहें इनायत फ़रमा दें, जभी तो फ़रमाया : "जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

एक हज़ार आयतें पढ़ने का सवाब

ऐ आशिक़ाने रसूल ! "सूरतुत्तकासुर" पढ़ने वाले को एक हज़ार आयतें पढ़ने का सवाब मिलता है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई इस की त़ाक़त नहीं रखता कि वोह रोज़ाना एक हज़ार आयतों की तिलावत करे ? सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : इस की त़ाक़त कौन रखता है ? इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई (रोज़ाना) "اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ" पढ़ने की त़ाक़त नहीं रखता ?" (यानी येह सूरत पढ़ना सवाब में एक हज़ार आयतें पढ़ने के बराबर है)।"

(مستدرک، 2/276، حدیث:2127)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : इस (सूरत) की तिलावत में एक हज़ार आयतों की तिलावत व

अ़मल का सवाब है, क़ुरआने करीम में छे हज़ार छे सौ छियासठ (6666) आयतें हैं, कस्र को निकालो तो छे हज़ार आयात रहती हैं और मक़ासिदे क़ुरआन छे हैं, जिन में से एक है "आख़िरत की पहचान" येह सूरए तकासुर में मौजूद है, इस लिए येह सूरत गोया क़ुरआने करीम का तक़रीबन छटा ह़िस्सा है, इस (सूरत) में ग़ौर करने से दुनिया से बे रग़बती होती है आख़िरत में रग़बत, जिस से नफ़्स गुनाहों से मुतनफ़्फ़िर और नेकियों में राग़िब होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/262)

इब्ने आदम का माल

ह़ज़रते मुत़र्रिफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप "اَلْھٰکُمُ التَّکَاثُرُ" की तिलावत फ़रमा रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इब्ने आदम कहता है कि मेरा माल, मेरा माल, ऐ इब्ने आदम : तेरा माल वोही है जो तू ने खा कर फ़ना कर दिया या पहन कर बोसीदा कर दिया या सदक़ा कर के आगे भेज दिया।"

(مسلم، ص1210، حدیث:7420)

क़ियामत के दिन पांच चीज़ों के बारे में सुवाल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "इन्सान उस वक़्त तक क़ियामत के रोज़ क़दम न हटा सकेगा जब तक कि इन पांच सुवालात के जवाबात न दे ले : ﴾1﴿ तुम ने ज़िन्दगी कैसे बसर की ? ﴾2﴿ जवानी कैसे गुज़ारी ? ﴾3﴿ माल कहां से कमाया ? और ﴾4﴿ कहां कहां ख़र्च किया ? ﴾5﴿ अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ कहां तक अ़मल किया ?" (ترمذی، 4/188، حدیث:2424) येह बड़े ख़ौफ़ की बात है कि इस वक़्त हम अपनी उ़म्र के तअ़ल्लुक़ से ग़ाफ़िल हैं, जवान तो जवान बूढ़े भी ग़फ़्लत का शिकार हैं, उन को भी एह़सास नहीं कि अब कोई दूसरा ऑपशन नहीं है, अब मौत ही आनी है। जवानों को भी ग़ौर करना चाहिए कि इन से पूछा जाएगा कि

जवानी किस काम में गुज़ारी। यूं ही माल तो बड़े जज़्बे के साथ लोग कमा रहे हैं और येह नहीं देखते कि कहां से आ रहा है, "कहां का ह़लाल और कहां का ह़राम जो साह़िब खिलाए वोह चट कीजिए" तो जितना माल मिल सकता है उतना बन्दा जमा कर रहा है ह़ालांकि दस्तूर है कि जितना माल ज़ियादा उतना ही वबाल भी ज़ियादा। सफ़र का भी उसूल है कि बस या रेलगाड़ी वग़ैरा में जिस के पास ज़ियादा सामान होता है वोह उतना ही परेशान होता है। नीज़ जो लोग हवाई जहाज़ के ज़रीए़ एक मुल्क से दूसरे मुल्क का सफ़र करते हैं उन को तजरिबा होगा कि ज़ियादा सामान वाले कस्टम वग़ैरा में किस क़दर परेशान होते हैं ! इसी त़रह़ जिस के पास दुनिया के माल का बोझ कम होगा उसे आख़िरत में आसानी रहेगी। चुनान्चे

"भारी बोझ" की तारीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का हाथ पकड़ कर तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! क्या तुम्हें ख़बर है कि हमारे आगे एक सख़्त घाटी है, इस पर से सिर्फ़ हल्के बोझ वाले गुज़र सकेंगे ? एक साह़िब ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं भारी बोझ वालों में से हूं या हल्के बोझ वालों में से ? फ़रमाया : क्या तेरे पास आज का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : कल का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी हां। फिर फ़रमाया : परसों का खाना है ? अ़र्ज़ की : जी नहीं ! आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तेरे पास तीन दिनों का खाना होता तो तू भारी बोझ वालों से होता। (معجم اوسط، 3/348، حدیث:4809)

हमारे यहां तीन दिन के खाने के ज़ख़ीरे की तो बात ही कहां है, मह़ज़ ह़िर्स के बाइ़स त़रह़ त़रह़ की ग़िज़ाओं से फ़्रिज भरा रहता है और बिला ज़रूरत हर चीज़ का अम्बार लगा रहता है। आह ! हम ह़रीसों का क्या बनेगा ! दौलत की कसरत का

बोझ, मज़ीद माल बढ़ाए चले जाने की हवस का बोझ, कई कई दुकानों और कारखानों का बोझ, बल्कि त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का भी बोझ मसलन सूद व रिश्वत का बोझ, धोके बाज़ियों का बोझ, दूसरों का माल नाह़क़ दबा लेने का बोझ हाए ! हाए ! सरों पर अब तो बोझ और बोझ ही बोझ है, आह ! इस क़दर बोझ के होते हुए पुल सिरात़ से गुज़रने की क्या सूरत होगी ! (पुल सिरात़ की दहशत, 11)

येह दुनियवी मिसाल है कि जितना माल ज़ियादा उतना दुनिया में भी वबाल, जितनी दौलत ज़ियादा उतना चोरों, डाकूओं और लुटेरों का ख़त़रा भी ज़ियादा, नीज़ भत्ता ख़ोरों की त़रफ़ से भत्ते के मुत़ालबे और धम्की का ख़त़रा कि भत्ता दो वरना हम तुम्हारा बच्चा उठा लेंगे या तुम को मार देंगे वग़ैरा, तो येह माल दुनिया में भी वबाल का सबब है। ग़रीब आदमी फ़ुटपाथ पर भी सुकून से सो जाएगा, जब कि मालदार आदमी घर के अन्दर दरवाज़े बन्द कर के भी ख़ौफ़ज़दा रहेगा कि कहीं कुछ हो न जाए, बहरह़ाल येह दुनिया इ़ब्रत की जगह है इस से दिल लगाना ठीक नहीं।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नमूने
मगर तुझ को अंधा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने
जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

येही तुझ को धुन है रहूं सब से बाला
हो ज़ीनत निराली हो फ़ैशन निराला
जिया करता है क्या यूंही मरने वाला
तुझे ह़ुस्ने ज़ाहिर ने धोके में डाला
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

बुढ़ापे से पा कर पयामे क़ज़ा भी
न चौंका, न चेता, न सम्भला ज़रा भी
कोई तेरी ग़फ़्लत की है इन्तिहा भी
जुनूं कब तलक ? होश में अपने आ भी
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

तुझे पहले बचपन ने बरसों खिलाया
जवानी ने फिर तुझ को मजनूं बनाया
बुढ़ापे ने फिर आके क्या क्या सताया
अजल तेरा कर देगी बिल्कुल सफ़ाया
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस से पहले कि हमारे बारे में येह शोर मच जाए कि फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया है, अब जल्दी ग़ुस्ल देने वाले को बुलाओ, चुनान्चे ग़स्साल (यानी मुर्दे को ग़ुस्ल देने वाला) तख़्ता उठाए चला आ रहा हो, ग़ुस्ल दिया जा रहा हो, कफ़न पहनाया जा रहा हो, फिर अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाए और ऐन मुम्किन है कि येह सब कुछ आज ही हो जाए, हो सकता है कल हो जाए, मौत हर सूरत में आनी ही है।

बारहा इल्मी तुझे समझा चुके   मान या मत मान, आख़िर मौत है

इस से किसी को भी राहे फ़रार नहीं है, काश ! मौत आने से पहले ही हम मान जाएं और जल्दी जल्दी तौबा कर के रिज़ाए इलाही पाने वाले कामों में लग जाएं, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बढ़ाने, ईमान की हिफ़ाज़त की कुढ़न पाने, गुनाहों की आदत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इश्क़े रसूल की शमा जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिए आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के दीनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिए, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिए आशिक़ाने रसूल के साथ क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिए और नेक आमाल के रिसाले के ज़रीए रोज़ाना अपना जाइज़ा ले कर हर अंग्रेज़ी महीने की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जमा करवाते रहिए, अल्लाह पाक ने चाहा तो क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन नसीब होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

एक दिरहम भी नहीं था

हज़रते सय्यिदुना औन बिन मुअम्मर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का बयान है कि एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी ज़ौजए मोहतरमा से

फ़रमाने लगे : फ़ातिमा ! तुम्हारे पास एक दिरहम हो तो दे दो, आज अंगूर खाने को जी चाहता है, उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे पास दिरहम कहां ! क्या आप अमीरुल मोमिनीन हो कर एक दिरहम की भी ह़ैसिय्यत नहीं रखते ? (बेक़रार हो कर) फ़रमाया : अंगूर न खाना इस से कहीं ज़ियादा आसान है कि कल मैं जहन्नम की ज़न्जीरें पहनूं। (تاریخ الخلفاء،ص188)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! अंगूर बेशक ह़लाल व त़य्यिब हैं लेकिन अल्लाह पाक की नेमत हैं और बरोज़े क़ियामत हर नेमत का ह़िसाब देना होगा, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ौफ़े आख़िरत के सबब अंगूर खाने से बाज़ रहे। आह ! आज हम एक से एक लज़ीज़ नेमतें खाते और बरतते (यानी इस्तिमाल करते) हैं और मज़ीद बेहतर से बेहतरीन की जुस्तजू (यानी तलाश) में रहते हैं, उ़म्दा से उ़म्दा तरीन कोठी भी नाकाफ़ी मह़सूस होती है, बड़े से बड़ा बंगला (GRAND VILLA) ह़ासिल करने के दरपै रहते हैं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां सूरतुत्तकासुर की दीगर आयतें ग़ाफ़िल इन्सान को झन्झोड़ रही हैं और उसे ग़फ़्लत की नींद से बेदार कर रही हैं वहीं उस की आख़िरी आयते मुबारका ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को बेक़रार किए देती है। चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ یَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِیْمِ۠﴾ (پ30، التکاثر: 8)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेमतों से पुरसिश होगी।

आयते मुबारका की तफ़्सीर में तीन अक़्वाल

﴾1﴿ ह़ज़रते इ़करिमा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने कहा : जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम

कौन सी नेमतों में हैं ? हमें तो जौ की रोटी और वोह भी सिर्फ़ आधा पेट नसीब होती है ! वही आई : क्या तुम जूते नहीं पहनते ? ठन्डा पानी नहीं पीते ? येह भी नेमतें हैं। ﴾2﴿ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने गन्दुम (यानी कनक, गेहूं) की रोटी खाई और फ़ुरात का ठन्डा पानी पिया नीज़ रहने के लिए मकान भी हो, येह वोह नेमतें हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा। ﴾3﴿ जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस आयते मुबारका के बारे में फ़रमाया कि इस से दुनिया की हर लज़्ज़त वाली शै मुराद है।

(تفسیر درّ منثور، پ30، التکاثر، تحت الآیۃ:8، 8/612-613)

सूरतुत्तकासुर की आख़िरी आयते मुबारका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो अल्लाह पाक ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं सेह़त व फ़राग़ (यानी ख़ुशह़ाली) व अम्नो ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुनिया में लज़्ज़तें उठाते थे, पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं ? उन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा। (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह, 30, अत्तकासुर, तह़तल आयह: 8, स. 1118)

दो अक़्सामे नेमत और सुवालाते आख़िरत

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सूरए तकासुर की आख़िरी आयत के तह़त बयान कर्दा तफ़्सीर में येह भी है : कस्बी नेमत (यानी अपनी कोशिश से ह़ासिल कर्दा नेमत मसलन मिठाइयां, लज़ीज़ ग़िज़ाएं, ठन्डे मश्रूबात, उ़म्दा मल्बूसात, दौलत, सल्तनत वग़ैरा) के बारे में तीन सुवालात होंगे : ﴾1﴿ कहां से ह़ासिल की ? ﴾2﴿ कहां ख़र्च की ? ﴾3﴿ इस का

क्या शुक्रिया अदा किया ? वहबी नेमत (यानी अल्लाह पाक की इनायत की हुई वोह नेमत जिस में बन्दे की अपनी कोशिश का दख़्ल न हो जैसा कि चांद, सूरज, हाथ, पांव, आंख, कान वग़ैरा) के बारे में दो सुवालात होंगे : ﴾1﴿ कहां ख़र्च की ? ﴾2﴿ उस का क्या शुक्रिया अदा किया ?

(तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान,पारह, 30, अत्तकासुर, तहतल आयह : 8, स. 956)

आह ! उम्दा उम्दा ग़िज़ाएं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बड़े ख़ौफ़ की बात है, आज हम उम्दा से उम्दा तरीन ग़िज़ाओं और नेमतों के हरीस बने हुए हैं मगर क़ब्र में कीड़ों की ग़िज़ा बनने और हिसाबे आख़िरत में फंसने के अन्देशे को भूले हुए हैं। हमें अच्छे से अच्छा और लज़ीज़ तरीन खाना चाहिए और वोह भी गर्म हो, एक तो "उम्दा ग़िज़ा" ब ज़ाते ख़ुद नेमत और उस का गर्म होना नेमत दर नेमत, सादा चाय से भी गुज़ारा नहीं, दूध पत्ती हो और वोह भी मीठी मीठी और गर्मा गर्म हो, यूं हमारी एक चाय भी कई नेमतों का मजमूआ बन जाती है ! इसी तरह हल्वा पूरी, पिज़्ज़े पराठे, अन्वाओ अक़्साम की मिठाइयां, तरह तरह के ताज़ा फल और ख़ुश्क मेवे (यानी ड्राई फ्रूट), ख़ुश ज़ायक़ा फ़ालूदे, ठन्डे मीठे मज़ेदार शरबत, बादाम पिस्ते वाला शीरख़ुर्मा, ठन्डी बोतलें (COLD DRINKS), आईसक्रीम, मक्खन, मलाई, कस्टर्ड, कबाब समोसे, गर्मा गर्म पकौड़े, तली हुई मछली, तली हुई चांपें, तन्दूरी रान, चिकन तिक्का, सीख़ कबाब, बर्गर और न जाने क्या क्या हमारा लालची नफ़्स तलब करता और खाता पीता है। अगर्चे मज़्कूरा तमाम ग़िज़ाएं खाना हलाल है मगर उन पर और तमाम नेमतों पर बरोज़े आख़िरत सुवालात किए जाएंगे। काश ! हमारा खाओ पियो नफ़्स क़ाबू में आ जाए। काश ! ऐसा हो जाए कि तफ़रीहन और महज़ हुसूले लज़्ज़त के लिए खाने पीने की आदत से हमारी जान छूट जाए।

जितनी ज़ियादा लज़्ज़तें उतनी ज़ियादा तक्लीफ़

हम चन्द मिनट की लज़्ज़त की ख़ातिर कितना बड़ा ख़तरा मोल ले रहे हैं इस बात को इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिए चुनान्चे दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 504 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 141 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : "बेशक सकराते मौत की शिद्दत दुनिया की लज़्ज़तों के मुताबिक़ है।" तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्आ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी। (منہاج العابدین، ص185 بتغیرٍ قلیلٍ)

नज़्आ की सख़्तियों की झलक

नज़्आ की सख़्तियों की झलक मुलाहज़ा हो चुनान्चे हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : मौत दुनिया व आख़िरत की हौलनाकियों में सब से ज़ाइद हौलनाक है, येह आरों के चीरने से, क़ैंचियों के काटने से और हांडियों के उबालने से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है। अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत (यानी मौत की सख़्तियां) लोगों को बता देता तो उन का ऐ़श और नींद सब कुछ ख़त्म हो जाता। (شرح الصدور، ص33)

काश के न दुनिया में पैदा मैं हुवा होता
क़ब्रो हश्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के तैबा में ज़ब्ह हो गया होता
आह ! कसरते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! मैं न दुनिया का इक बशर बना होता
शोर उठा येह महशर में ख़ुल्द में गया अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

हि़साबे नेमत के बारे में 9 लर्ज़ा ख़ेज़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

फ़ानी लज़्ज़तों से अपने आप को बचाने का जज़्बा बढ़ाने और दुनियवी नेमतों के सबब होने वाले हि़साबे आख़िरत से ख़ुद को डराने के लिए दिल हिला देने वाले 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए : ﴿1﴾ जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह पाक अपने बन्दों में से एक बन्दे को बुला कर अपने सामने खड़ा कर देगा और उस से उस के जाहो मर्तबे के मुतअ़ल्लिक़ इसी त़रह़ सुवाल करेगा जिस त़रह़ उस के माल के बारे में सुवाल फ़रमाएगा। (معجم اوسط، 1/140، حدیث:448) ﴿2﴾ बन्दा कोई भी क़दम उठाता है तो क़ियामत में उस से सुवाल होगा कि वोह क़दम किस लिए उठाया था ? (تاریخ ابن عساکر، 6/54، حدیث:1405) ﴿3﴾ क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे से येह सुवाल होगा कि क्या मैं ने तेरा जिस्म तन्दुरुस्त नहीं रखा था ? क्या मैं ने तुझे ठन्डे पानी से सैराब न किया था ? (तू ने उन के हु़क़ूक़ अदा किए या नहीं ?) (مستدرک، 5/191، حدیث:7285) ﴿4﴾ मालिक और मम्लूक (यानी ग़ुलाम) को और ज़ौज और ज़ौजा (यानी मियां बीवी) को लाया जाएगा फिर उन से हि़साब होगा, यहां तक कि मर्द से कहा जाएगा : तू ने फ़ुलां फ़ुलां दिन लज़्ज़त के साथ पानी पिया और शौहर से कहा जाएगा कि फ़ुलां औ़रत से निकाह़ के और भी त़लबगार थे लेकिन तू ने उस का निकाह़ चाहा तो मैं ने उन सब को छोड़ कर उस का निकाह़ तेरे साथ कर दिया। (क्या तू ने इन नेमतों का ह़क़ अदा किया ?) (مجمع الزوائد، 10/633، حدیث:18390) ﴿5﴾ क़ियामत में मोमिन से हर अ़मल का सुवाल होगा यहां तक कि उस से अपनी आंखों में सुर्मा डालने के मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया जाएगा। (حلیۃ الاولیاء، 10/31، حدیث:14406 مختصراً) ﴿6﴾ बन्दा जो ख़ुत़्बा पढ़ता (यानी वाज़ और बयान करता) है इस के बारे में भी उस से सुवाल होगा कि इस से तेरा क्या इरादा था ? (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 7/294، حدیث:514) (मुबल्लिग़ीन व मुक़र्रिरीन

ग़ौर फ़रमाएं कि बयान का मक़्सूद नेकी की दावत थी या बयान की तारीफ़ और वाह वा की त़लब या हुसूले शोहरत या दौलत ?) ﴾7﴿ जो शख़्स किसी शै की जानिब बुलाएगा क़ियामत के दिन उसे उस की दावत के साथ खड़ा किया जाएगा, ख़्वाह एक ही आदमी को दावत क्यूं न दी हो ! (ابن ماجہ،1/137،حدیث:208)(इस रिवायत में ख़ुलूस की त़रफ़ इशारा है मसलन नेकी की दावत मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिए दी थी या कोई और मक़्सद था ? इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मुबल्लिग़ीन भी ग़ौर फ़रमाएं) ﴾8﴿ क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तुम जिस नेमत के मुतअ़ल्लिक़ क़ियामत में सुवाल किए जाओगे वोह ठन्डा साया और उ़म्दा खजूर और ठन्डा पानी है। (ترمذی، 1/163، حدیث:2376مختصراً) ﴾9﴿ क़ियामत में हर ग़नी व फ़क़ीर (यानी हर अमीर व ग़रीब) आरज़ू करेगा कि काश ! दुनिया में इस के पास सिर्फ़ क़ूत (यानी सिर्फ़ इतना खाना होता जिस से ज़िन्दगी बच सके और कुछ न) होता। (ابنِ ماجہ،4/442،حدیث:4140)

हि़साबे नेमत के बारे में बुज़ुर्गाने दीन के 3 अक़्वाल

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जितना माल ज़ियादा होगा उतना ह़िसाब ज़ियादा होगा। (البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ،ص264،قول:774)
﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : क़ियामत में एक दिरहम वाले के मुक़ाबले में दो दिरहम वाले का ह़िसाब ज़ियादा सख़्त होगा। (الزہد للامام احمد بن حنبل،ص121،حدیث:797) ﴾3﴿ जलीलुल क़द्र ताबेई सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : क़ियामत में सब से सख़्त ह़िसाब तन्दुरुस्त फ़ारिग़ुल बाल (यानी ख़ुश ह़ाल) शख़्स से होगा। (تاریخ ابنِ عساکر،59/271)

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी : सदक़ा : वसीला। बे पूछे : बे ह़िसाब। लजाए : शर्मिन्दा। लजाना : शर्मिन्दा करना

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शेर के अन्दर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ कर रहे हैं : या अल्लाह पाक ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्मो ह़या का वासित़ा ! मुझे मह़शर में पूछगछ किए बग़ैर ही बख़्श दे, मैं तो अपने गुनाहों पर पहले ही शर्मिन्दा हूं मेरे आमाल का ह़िसाब ले कर मज़ीद शर्मिन्दा न फ़रमा।

इम्तिह़ां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

12 साल तक ह़िसाबो किताब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत के ह़िसाब का मुआ़मला निहायत संगीन है। इ़ब्रत के लिए एक ह़िकायत पेश की जाती है, पढ़िए और ख़ूब कुढ़िए चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : नाज़िमे निज़ामे उम्मत, साहि़बे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, सरदारे साकिनाने जन्नत अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِىَ اللهُ عَنْه के विसाले पुरमलाल के बाद मुझे आप رَضِىَ اللهُ عَنْه के उख़रवी मुआ़मलात जानने की शदीद ख़्वाहिश थी। एक दिन मैं ने ख़्वाब में एक मह़ल देखा तो पूछा : येह किस का है ? फ़िरिश्ते ने बताया : "ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ عَنْه का।" इतने में सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللهُ عَنْه उस मह़ल से बाहर इस ह़ाल में तशरीफ़ लाए कि आप पर एक चादर थी गोया अभी अभी ग़ुस्ल फ़रमाया है। मैं ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟ यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अच्छा मुआ़मला फ़रमाया। फिर मुझ से पूछने लगे : मुझे तुम से जुदा हुए कितना अ़र्सा

गुज़रा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : 12 साल। फ़रमाने लगे : अब जा कर हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं। (تاریخِ ابنِ عساکر، 44/483)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म देता हूं वासित़ा तुझे शाहे हिजाज़ का

(ज़ौक़े नात, स. 18)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
ख़ौफ़े इलाही की तल्वार से शहीद	01	दो अक़्सामे नेमत और सुवालाते आख़िरत	10
सूरतुत्तकासुर के मज़ामीन	03	आह ! उ़म्दा उ़म्दा ग़िज़ाएं	11
जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा	03	जितनी ज़ियादा लज़्ज़तें उतनी ज़ियादा तक्लीफ़	12
एक हज़ार आयतें पढ़ने का सवाब	04	नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक	12
इब्ने आदम का माल	05	हिसाबे नेमत के बारे में 9 लर्ज़ा ख़ेज़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा	13
क़ियामत के दिन पांच चीज़ों के बारे में सुवाल	05	हिसाबे नेमत के बारे में बुज़ुर्गाने दीन के 3 अक़्वाल	14
“भारी बोझ” की तारीफ़	06		
एक दिरहम भी नहीं था	08	12 साल तक हिसाबो किताब	15
आयते मुबारका की तफ़्सीर में तीन अक़्वाल	09	❀❀❀❀	

अगले हफ़्ते का रिसाला

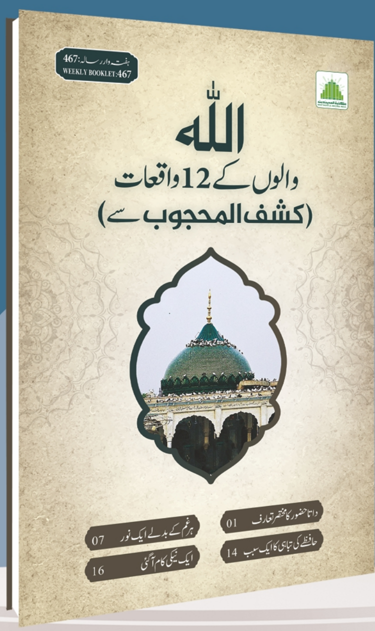

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel — Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025